Tender Heart High School, Sector- 33-B, Chandigarh

कक्षा - दसवीं

विषय - हिन्दी साहित्य

शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - एकांकी संचय

पाठ - 6 'दीपदान' (एकांकी) लेखक - डॉ० रामकुमार वर्मा

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो:-

"नहीं कुँवर ! तुम कभी रात में अकेले नहीं जाओगे। चारों तरफ़ ज़हरीले सर्प घूम रहे हैं। किसी समय भी तुम्हें डँस सकते हैं।"

प्रश्न (क) कुँवर कौन हैं तथा उससे यह बात करने वाला कौन है ?

उत्तर - कुँवर का नाम उदयसिंह है। वह चित्तौड़ का उत्तराधिकारी है। वह अल्पवयस्क (कम उम्र का) है जिसकी आयु चौदह वर्ष है। उससे बात करने वाली पन्ना धाय है। पन्ना कुँवर की धाय माँ एवं उसकी संरक्षिका है। उनकी आयु लगभग तीस वर्ष है।

प्रश्न (ख) 'ज़हरीले सर्प' से वक्ता का संकेत किसकी ओर है और क्यों ?

उत्तर - 'ज़हरीले सर्प' से वक्ता अर्थात् पन्ना धाय का संकेत बनवीर, की ओर, बनवीर के सैनिकों तथा उसके उन सहयोगियों की तरफ़ है जो किसी न किसी रूप में बनवीर के षड़यंत्रों में उसका साथ दे रहे थे और बनवीर के संकेत पर कुँवर उदय सिंह की हत्या कर सकते थे।

प्रश्न (ग) बनवीर कौन था ? वह उदयसिंह को क्यों मारना चाहता था?

उत्तर - बनवीर महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज का दासी-पुत्र था। उसकी आयु ३२ वर्ष थी। वह अत्यन्त क्रूर, विलासी, महत्त्वाकांक्षी और अत्याचारी था। मेवाड़ पर राज्य करना उसकी महत्त्वाकांक्षा थी, इसलिए वह दीपदान के उत्सव का आयोजन करता है सब

लोग उसमें भाग लें, नाच-रंग मनाएं और वह मौका मिलते ही उदयसिंह को मार दे। वह मेवाड़ का महाराजा बनने के लिए उदयसिंह को मारना चाहता था।

प्रश्न (घ) सोना कौन थी ? उसका परिचय दीजिए।

उत्तर- सोना रावल सरूप सिंह की अत्यन्त रूपवती कन्या थी। वह सोलह वर्षीय युवती थी। वह अत्यंत वाकपटु थी। नृत्यकला में वह पारंगत थी। सोना स्वभाव से अल्हड़, सीधी-सादी थी। वह बनवीर के द्वारा दिए जाने वाले प्रलोभनों को समझ नहीं पाती है। कुँवर उदयसिंह की मित्र थी और कुँवर भी उसे पसंद करते थे। वह हृदय से चाहती थी कि कुँवर उसका नृत्य देखें।

(5) उन्होंने कहा, महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बनकर बैठ गई है। अरावली पहाड़ तो तुम लोग ------ मयूर पक्ष कुंड में दीपदान करो। (पाठ्य पुस्तक पृष्ठ सं० 87)

प्रश्न (क) 'उन्होंने' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है ? उसका परिचय दीजिए।

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में 'उन्होंने' शब्द का प्रयोग 'बनवीर' के लिए रावल सरूपसिंह की पुत्री सोना के द्वारा किया गया है।

बनवीर महाराणा सांगा के भाई पृथ्वीराज का दासी पुत्र था। वह अत्यन्त क्रूर और विलासी था। वह चित्तौड़ का राज्य हड़पना चाहता था। उसे कुँवर उदयसिंह का संरक्षक नियुक्त किया गया था परन्तु अपनी महत्त्वाकांक्षा और लोभ को अंजाम देने के लिए उदयसिंह और महाराणा विक्रमादित्य की हत्या का षड़यन्त्र रचता है। वह महाराणा विक्रमादित्य की हत्या में कामयाब हो जाता है लेकिन पन्ना की सूझ-बूझ से उदयसिंह की हत्या नहीं कर पाता है। इस प्रकार वह चित्तौड़ का निष्कंटक राजा नहीं बन पाता है।

प्रश्न (ख) नाच-गायन तथा दीपदान का आयोजन किसने तथा किस उद्देश्य से करवाया ?

उत्तर- इस नाच-गायन तथा दीपदान का आयोजन बनवीर ने करवाया था। आज चित्तौड़ में कोई उत्सव नहीं था और न ही कोई खास

कारण था किन्तु बनवीर ने बिना कारण ही आज इस दीपदान और नाच-रंग का आयोजन किया था जिसके पीछे एक बड़ा कारण था - बनवीर द्वारा रचा गया षड़यन्त्र। बनवीर दासी पुत्र था और चित्तौड़ का राजा बनना चाहता था लेकिन उसकी इस इच्छा पूर्ति के मार्ग में दो बड़ी बाधाएँ थीं - एक महाराणा विक्रमादित्य (राणा सांगा का दूसरा पुत्र) और दूसरी बाधा चित्तौड़ के भावी राजा कुँवर उदयसिंह (राणा सांगा का तीसरा पुत्र -जो अभी नाबालिग था)।

बनवीर इस उत्सव और नृत्य के आयोजन के द्वारा लोगों का ध्यान इस तरफ़ बँटा कर खुद महाराणा विक्रमादित्य और कुँवर उदयसिंह की हत्या करके अपने मार्ग को निष्कंटक बनाना चाहता था।

प्रश्न (ग) पन्ना की कर्तव्यनिष्ठा एवं स्वामिभक्ति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - पन्ना 'दीपदान' एकांकी की नायिका है। वह महाराणा के छोटे पुत्र उदयसिंह की धाय माँ तथा संरक्षिका है। वह अत्यंत ममतामयी, कर्तव्यनिष्ठ, स्वामिभक्त, बुद्धिमती तथा दूरदर्शी है। कुँवर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा के लिए वह अपने इकलौते पुत्र चंदन की बली चढ़ा देती है। वह अपने हृदय पर पत्थर रखकर अपने कर्तव्य का पालन करती है तथा अपने मुँह से आह भी नहीं निकलने देती। उदयसिंह का पालन-पोषण तथा उसके जीवन की रक्षा करना ही उसके जीवन का उद्देश्य है।

वह एक वीरांगना भी और इसी कारण बनवीर जैसे दुष्ट एवं नरपिशाच से मुकाबला करने में भी नहीं हिचकती तथा अपनी वाकपटुता से बनवीर को निरुत्तर कर देती है।

प्रश्न (घ) बनास नदी का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है और क्यों ?

उत्तर - बनास नदी का प्रयोग बनवीर ने सोना के सामने इसलिए किया है क्योंकि वह सोना के माध्यम से अपने षड़यन्त्र को सफल बनाना चाहता है। इसलिए वह सोना से कहता है आज तुम सब

लड़कियाँ मेरे बनवास मयूर पक्ष कुंड में दीपदान करो और खूब नाचो - गाओ। ऐसा उत्सव मनाओ कि कुँवर उदयसिंह भी इसे देखे बिना न रह सकें। वह कहता है कि पन्ना के रहते कुँवर उदयसिंह इस उत्सव में शामिल नहीं हो पाएगा। अत: ऐसा नाचो-गाओ कि न चाहकर भी पन्ना को भी इसमें शामिल होना पड़े और जब वह कुँवर को लेकर उत्सव में आ जाएगी तब बनवीर इस अँधेरी रात में कुँवर को मारने में सफल हो जाएगा। इस प्रकार वह बातें बनाकर सोना के माध्यम से अपने षड्यन्त्र को सफल बनाना चाहता है।

[अंतिम पृष्ठ]